बाल भारती पब्लिक स्कूल पीतमपुरा
दिल्ली – 110034
साप्ताहिक योजना

कक्षा - दसवीं

कालांश -03

दिनाँक -5 /10/20 से 9 /10/20 तक
विषय- स्पर्श भाग -2
उपविषय-मनुष्यता (कविता)
अधिगम प्रतिफल

नैतिक मूल्यों की ओर प्रेरित करना।
-कवि एवं उनके साहित्यिक जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर पाएँगे।
-खड़ी बोली में समझ स्थापित करना। नए शब्दों के अर्थ समझकर अपने शब्द- भंडार में वृद्धि कर पाएंगे।
-कविता के भाव को आत्मसात कर पाएँगे ।
-कविता में वर्णित भावों को हृदयंगम कर पाएँगे।

सहायक सामग्री-
https://youtu.be/u1sk3bbP7lk
http://ncertbooks.prashanthellina.com/class_10.Hindi.Sparsh/K-4.pdf
कालांश-1
पाठ परिवर्धन-
कविता के अंत में शब्दार्थ दिए गए है। पहले सभी विद्यार्थी शब्दों को पढ़ेंगे एवं समझेंगे।
कविता की पंक्तियों का सस्वर वाचन एवं अर्थ को समझाया जाएगा।

मैथिलीशरण गुप्त जी की कविता की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। भाषा पर संस्कृत का प्रभाव है। काव्य की कथावस्तु भारतीय इतिहास के ऐसे अंशों से ली गई है जो भारत के अतीत का स्वर्ण चित्र पाठक के सामने उपस्थित करते हैं। गुप्त जी की कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम पर पहुँच गयी है। इन्होंने धार्मिक विश्वासों को आहत किए बिना कविता के भाव पक्ष को नए बोध से युक्त कर दिया है।

BAL BHARATI PITAMPURA

प्रकृति के अन्य सभी प्राणियों की तुलना में मनुष्य में चेतन शक्ति प्रबल होती है अतः वह स्वयं के अतिरिक्त दूसरों के हिताहित का ध्यान रखने में, दूसरों के लिए कुछ कर सकने में स्वयं को समर्थ पाता है। मनुष्य जो कुछ भी इस पावन धरती पर अर्जित करता है ,वह सिर्फ स्वयं के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए दूसरों के सहयोग से करता है।
प्रस्तुत कविता में कवि अपनों के लिए जीने-मरने वालों को मनुष्य तो मानता है लेकिन यह मानने को तैयार नहीं है कि ऐसे मनुष्यों में मनुष्यता के पूरे-पूरे लक्षण भी हैं। वह तो उन मनुष्यों को ही महान मानेगा जिनमें अपने और अपनों के हित चिंतन से कहीं पहले और सर्वोपरि दूसरों का हित चिंतन हो। उसमें वे गुण हों जिनके कारण कोई मनुष्य इस मृत्यु लोक में गमन कर जाने के बावजूद युगों तक औरों की यादों में भी बना रह पाता है। उसकी मृत्यु भी सुमृत्यु हो जाती है। आखिर क्या हैं वे गुण?

पहला पद -अर्थ

मनुष्य मरणशील प्राणी है, उसे इस बात का ज्ञान होना चाहिए। मनुष्य को मृत्यु से कभी डरना नहीं चाहिए। किंतु मनुष्य को इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि वह ऐसी सुमृत्यु को प्राप्त करे, जिससे सभी लोग उसे मृत्यु पश्चात् भी याद रखें। कवि कहते हैं कि उस मनुष्य का जीना या मरना व्यर्थ है, जो स्वयं के लिए जीता है। स्वयं के लिए जीने वाले मनुष्य को कवि पशु के समान बताते हैं। कवि की दृष्टि में सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

दूसरा पद-अर्थ

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि जो उदार व्यक्ति होते हैं, उनकी उदारशीलता को पुस्तकों या ग्रंथों में स्थान देकर उनका बखान किया जाता है। ऐसे लोगों के प्रति सभी आभार व्यक्त करते हैं तथा उन्हें पूजते हैं। कवि कहते हैं कि जो मनुष्य संसार में एकता और अखंडता के भावों को फेलाता या स्थापित करता है, उसकी कीर्ति का संपूर्ण संसार में गुणगान किया जाता है। अत: सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

क) कवि ने सुमृत्यु किसे कहा है?
ख)सरस्वती किसका यशोगान करती है और क्यों?
ग) संपूर्ण संसार में अखंड आत्मभाव कैसे भरा जा सकता है?

नोट-विद्यार्थी उपर्युक्त प्रश्नों को अपनी कॉपी में करेंगे।

कालांश-2

तीसरा पद -अर्थ

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि गुप्त जी पौराणिक कथाओं का दृष्टांत पेश करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार स्वयं भूख से व्याकुल रंतिदेव ने माँगने पर अपना भोजन का थाल दे दिया था, जिस प्रकार दधीचि ने देवताओं को बचाने के लिए अपनी हड्डियों को वज्र बनाने के लिए दे दिया था, जिस प्रकार राजा उशीनर ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपने शरीर का मांस बहेलिए को दे दिया था और जिस प्रकार वीर कर्ण ने अपना शारीरिक रक्षा कवच दान कर दिया था ठीक उसी प्रकार हमें भी दानवीर और साहसी

BALBHARATI PITAMPURA

बनना चाहिए। इस नश्वर शरीर के लिए मनुष्य को अत्यधिक भयभीत नहीं होना चाहिए। अत: सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

चौथा पद - -अर्थ

इन पंक्तियों के द्वारा कवि गुप्त जी सहानुभूति, करुणा और उपकार की भावना की महत्ता को बताते हुए कहते हैं कि इन गुणों से ईश्वर भी वश में हो जाते हैं। आगे कवि कहते हैं कि बुद्ध ने भी पुरानी परम्पराओं को तोड़ा, जो कि दुनिया के हित में था। इसलिए लोग आज भी उन्हें श्रद्धाभाव से पूजते हैं। कवि की नज़र में उदार व्यक्ति वही है जो दूसरों पर दया करे या परोपकार करे। अत: सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

पाँचवाँ पद-अर्थ

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के पास धन-दौलत या यश है तो उसे घमंड पालकर दूसरों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि कवि गुप्त जी के अनुसार, इस दुनिया में कोई अनाथ नहीं है। सभी के साथ ईश्वर का आशीर्वाद है। कवि गुप्त जी कहते हैं कि प्रभु के रहते हुए भी जो व्याकुल है, वह बहुत भाग्यहीन है। अत: सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

क)दधीचि को क्यों याद किया जाता है?
ख) बुद्ध के विरुद्ध वाद से आप क्या समझते हैं?
ग) मनुष्य को धन प्राप्त करने का घमंड क्यों नहीं करना चाहिए?
घ) भाग्यहीन किसे कहा गया है?

नोट-विद्यार्थी उपर्युक्त प्रश्नों को अपनी कॉपी में करेंगे।

कालांश-3

छठा पद-

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि आकाश में अनगिनत देवता मौजूद हैं, जो हाथ फैलाए दयालु और परोपकारी मनुष्यों के स्वागत में खड़े हैं। आगे कवि कहते हैं कि इसलिए हमें भी एक-दूसरे का सहयोग करके उन ऊँचाइयों को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए, जहाँ देवता खुद हमारा प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करें। कवि कहते हैं कि इस नश्वर संसार में हमें एक-दूसरे का सच्चा साथी बनने का प्रयत्न करना चाहिए। अत: सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

सातवाँ पद--अर्थ

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि सभी मनुष्य एक -दूसरे के भाई-भाई हैं। यह मानना ही हमारा बहुत बड़ा विवेक है। साथ ही यह भी बहुत बड़ी समझ है कि हम सबके पिता ईश्वर हैं। आगे कवि कहते हैं कि कर्म और शरीर से हम अनेक है, परन्तु आत्मा से एक हैं। कवि गुप्त जी अपनी बातों पर जोर देते हुए कहते हैं कि अगर

BHARATI PITAMPURA

भाई ही भाई की मदद नहीं करेगा तो उसका जीवन ही व्यर्थ है। अत: सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

आठवां पद--अर्थ

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि रास्ते में चाहे जो भी विपत्तियाँ आ जाएँ , कभी मत घबराओ। अपने मार्ग पर प्रसन्नतापूर्वक हँसते -खेलते हुए आगे बढ़ो

, बाधाओं को दूर हटाते हुए आगे बढ़ो । कवि गुप्त जी कहते हैं कि मनुष्य को यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि उनका आपसी सामंजस्य कम न हो तथा भेदभाव न बढ़े। जब हम साथ मिलकर एक-दूसरे के दुखों को दूर करते हुए आगे बढ़ेंगे, तभी हमारे जीवन की सार्थकता सिद्ध होगी। अत: सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों की ख़ातिर जिए।

(क) 'अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(ख) विवेकी मनुष्य कौन है?
(ग) कवि ने किसे अनर्थ माना है?
(घ)कवि ने अभीष्ट मार्ग पर चलने हेतु क्या संदेश दिया है ?
(ड) कवि ने किस समर्थ भाव की सराहना की है?

नोट-विद्यार्थी उपर्युक्त प्रश्नों को अपनी कॉपी में करेंगे।

गतिविधि -परोपकार विषय पर चर्चा की जाएगी।
चर्चा के उपरान्त बच्चे अनुच्छेद लिखेंगे।

मूल्यांकन प्राप्त करने की विधि ,सप्ताह के दौरान सीखने के साक्ष्य

मौखिक चर्चा ,गृहकार्य ,मौखिक प्रश्नोत्तर

BAL BHARATI PITAMPURA